समुद्र का एकान्त

—काव्य-संकलन—

आलोक शर्मा



संभावना प्रकाशन, हापुड़ - 245101

स्वत्वाधिकार : आलोक शर्मा, २३, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००७

पुस्तक मुद्रक : हरलालका आर्ट प्रिंटर्स, ४२, पथुरिया घाट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००६

पुस्तक प्रकाशक : सम्भावना प्रकाशन, रेवती कुञ्ज, हापुड़-२४५१०१

प्रथम संस्करण : उन्नीससौ इक्यासी

मूल्य प्रति पुस्तक : पच्चीस रुपये

A BOOK OF MODERN HINDI POETRY COLLECTIONS "SAMUDRA KA EKANT" BY AALOKE SHARMA. PUBLISHED BY SAMBHAWANA PRAKASHAN, REWATI KUNJ, HAPUR-245101, PRINTED BY HARLALKA ART. PRINTERS, 24, PATHURIA GHAT STREET, CALCUTTA-700 006. FIRST EDITION, 1981—COPY RIGHT, AALOKE SHARMA, PRICE Rs. 25/-

❂ प्रथमाक्षर

मैं और मेरी कविता, दोनों ही एक रचना प्रकिया से होकर गुजर रहे हैं, जहाँ मैं कविता को रच रहा हूं, वहीं कविता मुझे गढ़ रही है. कविता मानवीय संवेदन के माध्यम से, मुझे आदमीयत के परमोत्कर्ष पर पहुंचा देने की एक बेचैन तलाश है, और मैं, कविता को समय-स्पंदन के संदर्भ में कालजयी बना देने का अथक प्रयास हूं. गन्तव्य की यात्रा के लिए न तो कविता ने मुझे कोई नारा दिया, और न ही मैं कविता को किसी नारे में वांध पाया हूं. परन्तु मानवीय संवेदना के जिन बुनियादी और बेहद जरूरी नारों के अभाव में सभ्यता की सम्पूर्ण प्रगतिशीलता बाधित हो सकती है उन्हें मैंने और मेरी कविता दोनों ने बहुत ही सहज रूप में स्वीकार लिया है. क्योंकि यही वह बिन्दु भी है जो मेरे कवि को मेरी कविता के साथ प्रति-बद्ध करता है, तथा इसी प्रक्रिया में जीने और रचे जाने के एक सहज क्रम को जन्म देता रहता है.

सोलह वर्ष, छियानवे पृष्ठ, छप्पन कविताएं, एक संकलन, दो खण्डों में प्रकाशित अप्रकाशित रचनाएं काल क्रमानुसार उत्तर समुद्र तथा पूर्व समुद्र में विभाजित, कुछ फिर से संवारी हुई, कुछ बदले हुए नाम से इस संग्रह में संकलित हैं. कविताओं पर विशेष पूर्वकथन के रूप में प्रथम कविता "हलफनामा" नियोजित है.

मैं, नवल, अक्षय, शंकर, डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, बंगला कवि स्व० तुषार राय और मुरारी का विशेष आभारी हूं जिन्होंने कई बिन्दुओं पर, कई दिशाओं से, मुझे हमेशा सहयोग दिया है ये कुछ ऐसे मित्र हैं जिनका परोक्ष अपरोक्ष रूप से एक असाधारण प्रभाव मुझ पर और मेरी कविता पर हमेशा रहा है. भाई योगेन्द्र कुमार लल्ला तथा अशोक अग्रवाल को पुस्तक की संरचना एवं प्रकाशन के लिए अशेष धन्यवाद.

विजया—81 आलोक शर्मा

क्रमांक : उत्तर समुद्र

क्रमांक : पूर्व समुद्र

बचपन में बेबसी से आंचल छुड़ाकर
चली जाने वाली हर एक मां के लिए
इस दुनिया की भीड़ मे कलाई छोड़कर
खो जाने वाली अनेक बहनो के लिए
सिर पर मां का हाथ भी रखने वाले
विशाल हृदय विधुर पिताओं के लिए
कन्धों से जुता जूआ तुड़ाकर भी
स्नेह से मुड़कर ताकते भाइयों के लिए
टूटती सांसो में अपनी सांसें घोलकर
निरन्तर घुटने वाली कवि पत्नियो के लिए
जीवित पिता की आंखो में प्यार खोजते
फूल जैसे अनेक यतीम बच्चों के लिए
जनवरी पन्द्रह छियासठ को जन्म लेने वाले
अनेक मरे हुए हृत - पिण्डों के लिए
लड़खड़ाते कदमों को सहारा देकर
घर पहुंचाने वाले तमाम दोस्तो के लिए

उत्तर-समुद्र

हलफ़नामा



और फिर मुझे लगा
अब मुझे कह देना चाहिए
उन तमाम बातों के बारे में
जिन्हें अपने अन्दर रख लेने पर
आदमी मर जाता है
और जिन्हें
अपने से बाहर निकाल देने पर
आदमी मार दिया जाता है
कि एक सुख
इतने सारे दुखों के बदले
मुझे छू कर दूर चला जाता है
उन कागजों में खो जाने के लिए
जो बारिश की रात को
कहीं भीगते हैं
या पतझड़ के दिनों में
हवा के साथ
इधर-उधर भागते रहते हैं
या इनसे भी कहीं अलग
उन दराजों में
हमेशा-हमेशा के लिए
बन्द हो जाते हैं
जहां एक सीला हुआ अंधेरा
कागज खाने वाले जानवरों के साथ
उनका इन्तजार किया करता है
मेरे मन में उनके लिए भी
बहुत बड़ी संवेदना है

जो कहो
मेरी इन बातों को समझते हैं
और फिर
मेरो अधूरी यात्राओं को
पूरा करने के बाद
उन बातों को
अपने कलेजे में छिपाए
किसी कब्रगाह में जाकर
हमेशा-हमेशा के लिये सो जाते हैं
मैंने कभी नहीं चाहा है कि लोग
मेरी इन बातों से
कहीं कुछ सीखेंगे
अगर मैंने सोची है तो
केवल इतनी-सी बात
कि जैसे कोई ठण्ड की सुबह को
धूप में बैठना पसन्द करता है
या महीने के किसी एक दिन को
उपवास रख लेता है
यदि लोग चाहें
तो मेरे सन्दर्भ मे
अपने पहलू को बदल लें
निश्चित रूप से ऐसा करने में
मेरे अन्दर यश की इच्छा का
बहुत बड़ा हाथ रहा है
यश की इच्छा
महान व्यक्तियों की
अन्तिम इच्छा हुआ करती है
ऐसा मैंने कहीं पढ़ा था
पर मेरे लिए

यह अभिव्यक्ति के बाद की
पहली इच्छा है
क्योंकि अभिव्यक्ति के
तुरन्त बाद ही तो
सुख आकर चला जाता है
शायद इसका साथ
कस्तूरी की गंध की तरह
मेरे जीवन के
अन्तिम क्षणों तक बना रहे
पर मुझे खुशी होगी
कि मैं
अपने आपको झुठला कर
इसे अन्तिम कभी नहीं कहूंगा
मुझे हमेशा भली लगी है
वह बेचैनी
उन जानवरों की बनिस्बत
जो चारागाहों में बैठ कर
जुगाली किया करते हैं।



स्मारिका

o

जीवन और मृत्यु की
भौतिक सीमाओं से परे
दस हजार सूर्यों के
आलोक से प्रकाशित
मेरे युग की
महानतम् उपलब्धियों के प्रतीक
तुम जा चुके हो
मैंने तुम्हारा चेहरा
नही देखा
या शायद देखने ही नही दिया गया
अथवा मै ही
उन उपलब्धियों की
वैसी प्रतीकात्मकता से
घबरा गया था
वह उस समय बेहोश थी
उसने नही जाना
तुम कब आये
हम जो तुम्हारे खून से जुड़े हुए थे
हमने बाद में जाना
कि तुम कैसे थे
बिल्कुल अपने
उन सहधर्मियों की तरह
जिन्हे पश्चिमी जर्मनी की मांएं
अपनी छातियों से चिपका कर
अपने युग की
महानतम् उपलब्धियों की

आलोक शर्मा

घोषणाएं कर रही हैं
या बिल्कुल
नागासाकी और हीरोशिमा के
उन शिशुओं की तरह
जिनकी मांएं
उनके परतों शरीर में
हाथ-पैर खोजती हुईं
अपने जीवन के
ऐतिहासिक दिन गिन रही हैं
शायद तुमने अपने भाइयों से
हमें अधिक प्यार किया था
या इस योग्य नहीं समझा था
कि अपने युग का प्रतीक
हम जीवन भर ढो पायेंगे
तुम हमेशा हमेशा के लिए चले गये
पर अब
जबकि तुम जा चुके हो
जमीन के स्याह अंधेरे
और सीलन से भरे दरिया में
डूब चुके हो
जहां मेरे ये हाथ
तुम्हें कभी नहीं खोज पायेंगे
तब न जाने क्यों
तुम्हारी याद
शीशे के नुकीले टुकड़ों की तरह
इस भरी दोपहर के दिन
मन की सतह पर
चुभने लगी है
बीती बातों का

एक सिलसिला
मेरी नसों से होकर
गुजरने लगा है
तुम्हें नहीं मालूम
तुम्हारी प्रतीक्षा के क्षण
हमने कैसे बिताये थे
प्रतीक्षा इसलिए नहीं
कि कोई हमारा नाम ढोयेगा
नाम तो खैर व्यक्ति
स्वयं ढोता है
प्रतीक्षा तो थी
रचनात्मक प्रक्रिया को
उस चरम परिणति को
जिसकी अनिवार्यता तुम थे
या किसी हद तक
जीवन बीमा के रूप में।
उस सुरक्षा की
जिसकी आवश्यकता
हर औरत को
अपने सहयात्री से बिछुड़ जाने पर
पड़ा करती है
पर अफसोस कि वे क्षण
हमें छू कर
आगे निकल गये
उन कब्रगाहों की ओर
जहाँ जाकर वे
कभी वापस नहीं लौटते
तुम नहीं जानते
रात के घने अंधेरे मे ;

जब पहली बार उसने
मेरे कानों में फुसफुसा कर
तुम्हारे अस्तित्व की
बात कही थी
तो आवेग में भर कर
मैंने उस पर
वह सब कुछ अंकित कर दिया था
जो कोई भी पिता
ऐसी खुशियों से भर कर
कर सकता था
और तभी से आरम्भ हुए थे
प्रतीक्षा के वे क्षण
हम वे सारे अहतियात
बरतते रहे थे
जो एक ईमानदार मां बाप
किसी अजन्मे के प्रति
बरता करते हैं
मुझे अच्छी तरह याद हैं वे दिन
जब सुबह करीब आने लगा करती थी
हलकी ठण्ड और कुहासे के बीच
पश्चिम में पीला चांद
ढलने लगता था
और उपनगरों की ओर
जानेवाली गाड़ियों की सीटियां
सोये हुए शहर की छतों को छू कर
लौटने लगा करती थी
वह मेरी ओर करवट बदल कर
[illegible] रही होती थी
नींद नहीं आयी

और मैं
उसके जिस्म की
तमाम नसों को खोजता हुआ
वहां पहुंचने की
कोशिश किया करता था
जहां तुम्हारे अस्तित्व को
छू पाने की
जरा सी भी सम्भावना हुआ करती थी
ऐसे वक्त
सुबह को हल्की हवा में
और ढलती हुई चांदनी में
जैसे हमने ताल में नहाते
किसी सफेद फूल को
हसते हुए देख लिया हो
वैसी खुशियों से भर कर
एक-दूसरे में डूब जाया करते थे
फिर अचानक ही
तुम आ गये
समय से बहुत पूर्व
जैसा कि इस भागती हुई दुनिया का
कोई भी व्यक्ति कर सकता था
सारी रात
एक गहरी वेदना से
उसका शरीर ऐंठता रहा था
और सुबह तक
उसकी बगल में लेटा हुआ मैं
किसी धुन्ध के पीछे
तुम्हारा चेहरा
तलाश करता रहा था

आलोक शर्मा

धीरे-धीरे सारी छायाएं
खिसक कर
दीवार से चिपक गयी थी
बीच-दोपहर का वह अकेलापन
मेरी नसों में बजने लगा था
डाक्टर के बूट की आवाज
तामचीनी के बरतनों की खनखनाहट
दवाइयों की गन्ध
लोगों के उतरे चेहरे
कैंची चाकू और सूइयों के बीच
उसकी चीख
मुझे लग रहा था
मैं उन उतरे चेहरों
और उन आवाजों के बीच
डूब रहा हूं
मैंने घबरा कर
छत पर उगी बेगन बेलिया की
कोमल शाखों को
कस कर पकड़ लिया था
और दिगन्त के सूनेपन में
किसी ऐसे मसीहा को
तलाशता रहा था
जो आकर
उसे उसकी वेदनाओं से
छुटकारा दिला दे
और तभी क्षण भर के लिए
मैं तुम्हें भूल गया था
कदाचित् माटी के प्रति
मेरे मोह की

वह असमर्थता का क्षण था
पर उस खोखली रिक्तता में
मुझे कोई नहीं मिला
कोई नहीं
केवल मिल सकी
एक थकी हुई सांस
जो थक कर भी नहीं थकती
और मैं अपने आप में
फिर से चलने लगा था
शायद यही थी
वह आस्था
जिसे न जाने मैं कहां-कहां
खोजता रहा था
आवाजें बन्द हो चुकी थीं
सिर्फ मैं अपने दिल को
धड़कते हुए
महसूस कर सकता था
जो तुम्हारी पहली आवाज
सुनने के लिए
क्षण के सहस्रांश से भी छोटे
उन काल खण्डों को
गिन रहा था
जो किसी हिमनदी की तरह
धीरे-धीरे खिसक रहे थे
या जो किसी सागर की
सूनी गहराइयों की तरह
अकेले और ठण्डे थे
और इसके बाद ही
वे तुम्हें ले गये

मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि
मैं तुम्हारे चेहरे से छनते [redacted]
दस हजार सूर्यों का
प्रकाश सह सकूं
और न ही मुझे
वैसा करने दिया गया था
तुम्हारे जाने के बाद
मेरे मन के
समस्त प्रकोष्ठों में
एक सूनापन भर गया था
मैं सोच रहा था
उस बेहोशी के सम्बन्ध में
जिसमें बहुत गहरे डूब कर
वह तुम्हे
सीप की तरह
ऊपर भेज चुकी थी
पर खुद
अभी तक नहीं लौट पायी थी
मै नही जानता था
उसे क्या उत्तर दूंगा
जबकि मै फिर से तुम्हे
उन्ही गहराइयों में खो चुका था
सांझ के सन्धि प्रकाश में
वह अपने आप में लौट आयी थी
सबसे पहले
उसने अपने आसपास
तुम्हें खोजा था
फिर मेरी पीली आंखों मे उभरे
तुम्हारी विदा के निशान

उसके कलेजे से टकरा कर
आंसुओं में लौट आये थे
एक ऐसा प्रश्न था
जिसका कोई उत्तर नहीं होता
केवल होती है निष्पत्ति
जो रुदन से मिल जाती है
किसी अनदेखे के प्रति
या किसी अपने के प्रति
आक्रोश में ढल कर
ठण्डेपन में बदल जाती है
पहले उसने झकझोर कर
मुझसे तुम्हें मांगा था
फिर मेरी असमर्थता पर मर कर
मुझसे लिपट गयी थी
हम बिल्कुल नहीं समझ पाये थे
कि जीवन और मृत्यु की
भौतिक सीमाओं से परे
दस हज़ार सूर्यों के आलोक से
प्रकाशित
हमारे युग की
महानतम् उपलब्धियों का प्रतीक
हमारे बीच कैसे जन्मा था
क्योंकि हममें तो
कुछ भी ऐसा नहीं था
जो मरियम या जैकब से
मिलता-जुलता हो
पर अब
जबकि तुम जा चुके हो
मेरे पास

कुछ भी ऐसा नहीं है
जो मैं तुम्हें दे सकूं
क्योंकि
मेरे और तुम्हारे बीच
स्याह जमीन का
अंधियारा है
सीलन से भरी झील की
दूरी है
जहां मेरे ये हाथ
कभी नहीं पहुंच सकते
सिर्फ अपने को
समझाने के लिए
यात्रा की
इस स्मारिका को
गढ़ रहा हूं
जबकि जानता हूं
समय की रेत में
यह सब भी
उसी तरह ढक जायेगा
जैसे तुम
जैसे विगत के प्रति
इस दुनिया का प्यार।



आत्माभिव्यक्ति

•

मैंने देखा
सागर की सतह पर किसी ने
धूप के सुनहले दाने
बिखेर दिये थे
जैसे कोई मूंग बिखेर कर
कबूतरों को
आवाज़ें देता है
उन्हें मैं चुग रहा था
और चुग रही थीं उन्हें
मेरी समानधर्मा लहरें

यहां
समुद्री पक्षियों का
कालजयी गीत था
नरकुल पर पत्ते थे
पत्तों पर हवा थी
और हवा में
एक बांसुरी बज रही थी
जैसे कोई पूर्णिमा की रात का
कहीं दूर बांसुरी बजाता है
मैंने देखा
मछुआरे ने अपना जाल
ऊपर खींच लिया था
शायद सोनमछली का मौन
उससे बंध गया था
मुझे लगा
मेरी दो टुकड़ा मौतें

पास-पास पड़ी हैं
एक : उस सोनमछली के मौन में
और दूसरी : उस मछुआरे की
भूखी अंतड़ियों में
मेरी चिन्तना के पंख
इतने मजबूत नहीं थे
जो विगत और अनागत में उड़ कर
अपनी मौत के लिए
कोई दवा ढूंढ़ लाते
मैंने देखा
सागर की सतह पर
धूप के सुनहले दाने
काले पड़ गये थे
अब न मैं उन्हें चुग रहा था
और न मेरी समानधर्मा लहरें
समुद्री पक्षियों का
कालजयी गीत
कहीं खो गया था
अब न नरकुल पर हवा थी
और न उसमें
कोई बांसुरी बज रही थी
मैं भारी कदमों से
अपनी छान में
लौट आया था
क्योंकि वहां
आंख मींच लेने पर
न तो समुद्री पक्षियों का
कालजयी गीत होता है
और न मेरी कई टुकड़ा मौतें।



सूर्य-यात्रा

•

ओ रक्तमणि को
पद्मपुष्प के पराग में
छुपाये रखने वाली नायिका
खो दिया है मैंने
अपना समस्त अहंकार तेरे अन्दर
तू पूछती है
कि अब मुझमें
वह सात अश्वों वाली तेजी
क्यों नहीं रह गयी
या क्यों अब मैं
नहीं मुस्करा पाता
अब विकच पुण्डरीक के सदृश
तो सुन
तुझे तेरा अर्थ देने में
खो दिये हैं मैंने
अपने वे तमाम अर्थ
जिनसे मैं कहीं योद्धा कहलाता था
या बांट दिया है
अपनी शिराओं में बहने वाला
वह रक्त
तेरी उस सन्तति को
जो कहीं हमारी आँखों से रोयेगी
या हमारे कण्ठों से
गीत गायेगी
अब जो हम केवल
एक दूसरे को
शाप दिया करते है

आलोक शर्मा

इसका यह अर्थ
कदापि नहीं हो सकता
कि हमें
एक दूसरे की मुखाकृति से
नफरत हो गयी है
या हम कहीं एक दूसरे से
ऊब गये हैं
बल्कि यह तो इंगित करती है
मरणोपरान्त उस जीवन की ओर
जिसमें हमारा अवचेतन
अब कहीं विश्वास करने लगा है
मेरे अन्दर जो कुछ भी थका है
या मेरे डैनों से
यह जो राख झरने लगी है
इससे तू कभी
यह मत समझ लेना
की चीड़ वन की चांदनी में
मुझे मेरा इच्छित पराग
नहीं मिल सका
यह तो मात्र कथा है
मेरी उन अधूरी सूर्य यात्राओं की
जो हर बार
अपूर्ण स्वर्ण कलश में
अपने आंसुओं को ही लेकर
लौट सकी है
अब जब हम जन्म लेंगे
दो शिलाओं के रूप में
किसी सागर के तट पर
और नहायेंगे
समुद्र के खारे जल में

तो तू भूल कर भी यह मत कह बैठना
कि हमने एक दूसरे को
प्यार नहीं किया था
नहीं तो मरी हुई मछलियों के कंकाल
भ्रूण हत्याओं से गर्भित
सीपियों और शंखों के विश्वास
फिर से जाग उठेंगे
नहीं अपराजिता
तू ऐसा कहने का अपराध
कभी मत करना
अगर कहना
तो केवल इतना ही कहना
कि नये प्यार में
और बरते हुए प्यार में
जमीन आसमान का अन्तर होता है।



युद्ध और खाई



कदाचित् हमें ज्ञात नहीं
यदि हमारे सीमान्त के प्रहरी
बुद्धिजीवी होते
तो अपने आपको
जीवित महसूस करने के लिए
वे स्वयं को किसी खाई में
भिन्न मार कर मर जाते
दायीं ओर के राजनीतिज्ञ होते
तो घाटियों में चिल्ला-चिल्ला कर
अपने कपड़े फाड़ते
और पागल होकर कहीं भाग जाते
बायीं ओर के साम्यवादी होते
तो खन्दकों में
फुसफुसाहट से भरी
सभाएं करते
अपनी दाढ़ियों के बाल बढ़ाते
और सीमा के उस पार जाकर
आकाश की ओर थूकते
दार्शनिक होते
तो सीमा विवाद विस्मृत कर
बुत बने खड़े रह जाते
पूंजीपति होते
तो रक्षाकोष में दान देते
और जितना देते
उससे कई गुना अधिक
देश को अभावग्रस्त बना देते

और यदि कहीं वे
साधारण नागरिक होते
तो अपनी खिड़कियों पर
कागज चिपका कर
युद्ध की थकान महसूस करते
पर शुक्र है
कि वे इनमें से कुछ भी नहीं हैं
कुछ भी नही
वे केवल जवान हैं जवान
जो अपनी जमीन के लिए
मर मिटने वाली परम्परा में
विश्वास करते हैं
और उस आधुनिकता को
कलेजे से लगाये रखना
पसन्द करते हैं
जिसने
अनगिनत बख्तरबन्द गाड़ियों का
कलेजा छील कर रख दिया है
अच्छा हो
हम कुछ भी न कहें
कुछ भी नही
केवल उनकी ओर देखते हुए
अपने आपको को
रक्षित महसूस करते रहे
क्योंकि हममे से अभी तक
एक भी आदमी
नियरेस्ट सब-ऐरिया हैडक्वार्टर्स मे
अपना नाम लिखाने
नहीं जा सका
हां हम एक काम कर सकते हैं

उन बर्फीली हवाओं में
पानी से रिसती खन्दकों में
और शरीर में छिद कर
लहूलुहान कर देने वाली
झाड़ियों में
उनके लिए कुछ बिस्कुट
कुछ कम्बल
कुछ सेफ्टी रेजर
भेज दें
ताकि हमारे काम आने के लिए
वे जिंदा रह सकें
इसके अतिरिक्त
और हमारी घुनी हुई हड्डियां
कर भी क्या सकती हैं
क्योंकि अब हमारे पास
अपना कुछ भी नहीं रह गया है
अपने अपराध
अपना खालीपन
अपनी गलतियां
सभी कुछ तो हम
उगल चुके हैं
स्वीकार कर चुके हैं।



मानस मृगया



कभी-कभी सुबह के हलके प्रकाश में
मैं उस ताल के निकट चला जाता हूं
जहां रोशनी की विपरीत दिशा में
उड़ते हुए कलहंसों के जोड़े
आकाश से जल की सतह पर उतरते हैं
ताल का जल रह-रह कर कांपता है
और किसी झाड़ी के पीछे छिपा बैठा मैं
अपनी सांस रोके
उनका उतरना देखता हूं
मैं उन्हें देखता हूं
जो अभी-अभी जन्मे हैं
और उन्हें भी जो बीत चले
अचानक
मेरी उंगलियां बन्दूक के घोड़े पर
कसने लगती हैं
पसीने की एक बूंद मेरी नाक पर
उभर आती
धांय की आवाज के साथ
एक चीख
ओर एक दूसरे को काटती हुई आवाजें
आकाश की ओर उड़ जाती हैं
कुछ देर के लिए वहां
अंधेरा छा जाता है
मैं आहिस्ते से उठ कर
उस ओर चल देता हूं
जहां मृत पक्षी

मेरा इन्तजार कर रहा होता है
लेकिन उसकी फटी हुई आंखें
और चोंच से बहते हुए रक्त को देख कर
मैं कुछ देर के लिए सहम जाता हूं
पर फिर अपने अचूक निशाने की बात
मेरा मन प्रसन्नता से भर देती है
मै आहिस्ते से उसे पंजे के बल
अपनी उंगलियों से लटका लेता हूं
और तभी एक गन्ध कहीं से आकर
मुझे बतला जाती है
कि वह मरने से पहले बीमार भी था
मैं सोचने लगता हूं कि क्या करूंगा उस पक्षी का
क्योंकि मैं शाकाहारी शिकारी होता हूं
अचानक मुझे आ जाती है याद
गांव के रास्ते पर खड़े रहने वाले
उस लड़के की
जो हर बार मेरे हाथ में झूलते शिकार को
ललचायी निगाहों से देखता है
पर जब मैं उस लड़के के निकट पहुंचता हूं
तो उस पक्षी को मैं अपने आप में छुपा लेता हूं
क्योंकि बीमार पक्षी रात गये
पेट में दर्द पैदा कर देते है
फिर मैं तेजी से उस ओर निकल जाता हूं
जहां गांव के पिछवाड़े एक बहुत बड़ा झुरमुट है
मिट्टी के नीचे बहुत नीचे उस पक्षी को गाड़ने के बाद
मै घर वापस लौट आता हूं
●

महाद्वार



ठण्डी रात की
गहरी नींद में
मुझे कोई
दूर से पुकारता है
रस्सी से बंधी खाली नाव
और चप्पुओं की आवाज
अजाने अंधेरे में
मेरी आंखों के आगे
उभरने लगती हैं
सागर
किसी झील की तरह
शान्त होता है
हवा
जल की सतह छू कर
निःशब्द गुजर जाती है
और गदराये मेघ
बहुत नीचे उतर आते है
मौन के
निस्सीम पुल के
उस पार
जहां सागर और आकाश
मिल जाते हैं
एक महाद्वार से
प्रकाश फूटता है।



यातना-शिविर



मेरी जिन्दगी के साझीदार
आजकल मैं जिस जेल में बन्द हूं
और सजाएं काट रहा हूं
उसके चारों तरफ
कोई बहुत ऊंची दीवार नहीं
और न ही कोई ऐसी बन्दिश है
कि मैं कहीं आ-जा न सकूं
फिर भी मैं तुमसे नहीं मिल पाता
इसका मुझे बेहद दुख है
न जाने क्यों
अपने और निकट के
विजिटर के आते ही
इस जेल की दोनों खिड़कियां
अपने आप बन्द हो जाती हैं
कई वर्ष पहले
जब मैं इस जेल की कोठरी में नया-नया आया था
तब मेरे दिमाग की नसें
खौलते हुए इस्पात से भरी हुई थीं
तो मैं लोगों
और उनके आने वाले वक्त के बारे में
सोचते हुए
तुम्हें जरूर भूल जाया करता था
पर अब
जबकि इस दिमाग की स्याह कोठरी से
एक-एक करके
तमाम लोग जा चुके हैं

और आने वाला वक्त
बिना किसी नये परिवर्तन के
बीत चला है
तो मैं अपने सिवाय
या अपनी जरूरत से सम्बन्धित
उन लोगों के सिवाय
जैसे कि मेरे लिए तुम हो
और कुछ भी नहीं सोच पाता
शायद तुम अन्दाज लगा पाओ
उस व्यक्ति की वेदना का
जो अपना वकील
न्यायाधीश और मुजरिम
खुद बन गया हो
या जिसकी रातें
कच्चे मांस के जलने की
चिरांयध से भर उठी हों
और दिन अपने साथ किये गये
परिश्रम के स्वेदों में डूब गया हो
अपने ऊपर लगाये गये आरोपों की
वह फहरिस्त
जो पहले हर वक्त मेरी आंखों के आगे
टंगी रहा करती थी
अब वह भी
न जाने क्यों धुंधली पड़ती जा रही है
न जाने कहां से आकर
एक लम्बा वक्त
उस पर लेट गया है
पर कुछ बहुत ही अहम्
और हमेशा सालने रहने वाले आरोप
जो तुमसे सम्बन्धित हैं

आज भी मेरी आंखों में जाग रहे है
मुझे अच्छी तरह याद है
टीन देकर पाट लेने वाले
समुद्री व्यापारियों की तरह किया गया
तुम्हारे साथ
अपना वह सौदा
कि मैं तुम्हे शहद दूंगा
और इसके बदले
मैं तुमसे कच्चा मांस लूंगा
मुझे आज भी याद है
अपनी वह वादाखिलाफी
जब मैं लेने के बदले
तुम्हें कुछ भी नहीं दे पाया था
और तुम्हारे सन्दर्भ मे
अपने ही लोगों के सन्दर्भ में
सजायाफ्ता हो गया था
पर न जाने क्यों
इन दिनों मुझे ऐसा लगने लगा है
जैसे मेरी रिहाई के दिन
अब करीब आ गये है
क्योंकि जिस जमीन पर मैं खड़ा हूं
उसमें मुझे एक दरार
दिखलाई देने लगी है
मेरा वकील बेहद चालाक है
और मेरा न्यायाधीश
अलसायी दोपहरी में
झपकियां लेते हुए
उस बूढ़े काजी के रूप में
बदल चुका है
जिसे किसी की जिन्दगी से

अपनी नींव अधिक प्यारी होती है
पिछले दिनों मेरे वकील ने
जो मसविदा तैयार किया था
उसमें मैंने कहीं एक जगह पढ़ा था
चूंकि प्रतिवादी ने भी
वावाखिलाफी की थी
इसलिए मुजरिम को
अब रिहा कर दिया जाना चाहिए
पर क्या तुम्हें विश्वास है कि
रिहा हो जाने पर
मैं सही ढग से जी पाऊंगा
या उस शपथ का
पालन कर सकूंगा
जिसे मैं अपने न्यायाधीश के
सामने लूंगा
तो क्या कभी ऐसा नहीं होगा
कि मैं केवल अपने ही सन्दर्भों में
जीवित रह सकूं
या वह जिन्दगी
जो कुछ भी नहीं बन सकी
उसे कम-से-कम
मुजरिम न बनने दूं।

●

अपने अंधेरे में



कभी-कभी रात को
जब हवा रुक जाती है
और गर्मी बढ़ जाती है
सो एक गहरी नींद से
अचानक जाग कर मैं
अपने होने के अहसास को
तलाशता हुआ
उन आवाजों को सुनने की
कोशिश करता हूं
जो मेरे शहर से
उभर कर
मेरे कमरे की
छत से टकरा कर
मेरे ऊपर गिर पड़ती हैं
किसी मासूम बच्चे के
रोने की दर्दनाक आवाज
किसी स्त्री का
सिसकियों से भरा
महीन स्वर
किसी पुरुष की
दबे कण्ठ चीत्कार की
तेज आवाज
अभी-अभी आकर खड़ी हुई
लारी के इंजिन की
घरघराहट
बूढ़ी खांसी के साथ

दूर कहीं
चोर-चोर चिल्ला कर
भागती हुई भीड़ की आवाज
बांसुरी के सुरीले स्वर
कुत्ते और बिल्लियों का रुदन
एकाकी पक्षी की चीत्कार
मुझे लगता है जैसे मेरा वक्त
बर्फ की किसी
बहुत बड़ी चट्टान के नीचे
दब गया हो
पर इसी के साथ
मुझे खुशी होती है
कि यही है मेरा शहर
यही है मेरा समय
मैं अपना होना अपने ही समक्ष
प्रमाणित करने के बाद
गहरी नींद में
सो जाता हूं।



वियतनाम-वियतनाम

o

मुझे नहीं मालूम
बात कहां से आरम्भ हुई थी
और इसका अन्त कहां होगा
क्योंकि मैं
एक बहुत ही पिछड़े हुए मुल्क का
आदमी हूं
जहां तेजी से बांध बनते जा रहे हैं
और सीमेण्ट की फैक्टरियों की
कतारें
एक के बाद एक
बिछती चली जा रही हैं
पर जो बौद्धिकता
और अपने उत्तरदायित्व के मामले में
वृत्त में सबसे पीछे खड़ा है
मुझे नहीं मालूम
इसका नम्बर फिर कब आयेगा
और न ही मुझे इसकी चिन्ता है
पर मुझे इतना जरूर मालूम है
कि यहीं कहीं पास से होकर
नर हत्याओं का एक सिलसिला
तेजी से गुजर रहा है
जिसके बहुत पीछे हैं
रोते हुए यतीम बच्चे
और वे बेवा स्त्रियां
जो अब कभी
शादियां नहीं कर पायेंगी

मुझे नहीं मालूम
कोई कैसे बरदाश्त कर सकता है
कान के पास रेंगती हुई
किसी कातर को
शायद भूख ने
हमारी चेतना को खा डाला है
या नसें ही
कुछ इस कदर सूख गयी हैं
कि स्पर्श ज्ञान भी नहीं रह गया है
नहीं तो जिन्दगी
जिसका टूटना
न ही लोग वहां बरदाश्त कर पाते हैं
और न ही जिसका टूटना
लोग यहां सह पाते है
तो आखिर मैं कैसे समझ लूं कैसे
कि हम
किसी गलत दबाव में
नहीं जी रहे है।



सोया हुआ गांव



आज
मैं वहां गया था
जहां नदी बह रही थी
आकाश में
पन्द्रहवां चांद
डूब रहा था
सारा गांव
एक गहरी नींद
सो चुका था
दूर-दूर तक
कहीं कोई आवाज़
नहीं थी
सिवाय एक
अकेले कुत्ते के
रोने की आवाज़ के
जो गांव के
सिवानों पर
भूंक रही थी
मैंने सोचा
यही वक्त ठीक होगा
अपने गुजरे हुए
उन क्षणों को
एक बार फिर जीने
और फिर [illegible]
जिन्हें मैं
किसी को [illegible] हूं

किसी के पेट से
या किसी की
रगों से चुराया था
पर तभी
मुझे लगा
जैसे कुत्ते के
रोने की आवाज
मेरे पास की
झाड़ियों के
करीब आ गई है
मुझमें
इतना साहस
नहीं रह गया था
कि मैं वहां
कुछ देर और
ठहर पाता
मैं
वहां से
घबराकर वापस
लौट आया था
पर गांव
अब भी सो रहा था।



यादों का सुख



कभी-कभी
सांझ के धुंधलके में
तुम्हारी स्मृतियों का सुख
मेरे साथ होता है
रोशनी के साये की तरह
मासूम और उजला
फिर पार्क के
खुलेपन से
वह मेरे साथ
घर चला आता है
उस परशियन
बिल्ली की तरह
जिसे अभी
[illegible] दिनों पहले
मेरे पड़ोसी ने
खरीदा है
बरामदे में
खाने की मेज पर
और
अकेले कमरे में बिछे
मुलायम बिस्तर पर
लगता है
तुम मेरे करीब हो
नग्न हो
फिर लगता है
नहीं हो

कहीं दूर हो
और
एक गहरे संवेग के साथ
मैं यह
महसूस करने लगता हूं
कि तुम्हारी यादों के
इस सुख को
मैं
किसी भी सजीसजाई
दुकान से
खरीद सकता हूं
और तब मुझे
कोफ्त होने लगती है
तुमसे
अपने आपसे
और हमारे प्यार से
ऐसे वक्त मेरे पास
कोई भी तो
ऐसा यंत्र नहीं होता
जिससे मैं नाप सकूं
प्यार की गहराइयों को
या कह सकूं इसे छिछला
उन छोकरों की तरह
जो प्यार को
किसी अपरिचिता के साथ
किसी मेले में
चरख पर
झूला झूलने के अतिरिक्त
और कोई भी महत्व
नहीं दे पाते

या समझ लूं
इसे गहरा
उन बुजुर्गों की तरह
जो प्यार को
गन्ने के रस की तरह
चूसते है
और इसके
कई स्वाद बतलाते हैं
और तब मैं
बेहोश होने लगता हूं
उन तमाम चीजों के बीच
मुझे लगता है
किसी भी वस्तु के
इस अन्तिम अर्थ से
बेहोश हो जाने से
मुझे
बेहद-बेहद
प्यार है



अन्तर-समुद्र



सागर तल में
डूबी हुई नाव
अथाह जल से
बोझिल है
सीपियों
शंखों और मूंगों ने
इसे अपनी अल्पना से
सजा रखा है
सुनहली
और पारदर्शी
मछलियों ने
इसमें अपने घर
बना लिए हैं
सेवार का मखमली स्पर्श
इसे अपने हाथों से
सहेज रहा है
समय की
कुंकुम की पर्तें
एक के बाद एक
इसके ऊपर बिछ गई हैं
फिर भी सतही लहरों से
आक्रान्त
यह नाव
धीरे-धीरे
हिल रही है।



आवाजों के चौराहे



हर चौराहे पर
आवाजें बदल जाती हैं
और इनके अर्थ
किन्हीं अंधेरे गलियारों में,
आकर सो जाते हैं
धुन्ध जिसके पीछे
बर्फ घिसटती है
कांच के नुकीले टुकड़ों की
खनखनाहट में
पास से होकर
गुजर जाती है
बस्तियां, बस्तियों के परे
बस्तियां
अपनी जमी हुई उंगली उठाकर
जिस ओर इंगित करती हैं
वहां कुछ नहीं होता
केवल दल-दल उबलती है
सड़े पत्तों के बीच
एक मरी हुई गर्म हवा
बेतहाशा चक्कर काटती है
बर्फ और भाप के
दबाव के बीच
पिसती हुई सांस
किसी ऐसे अर्थ को तलाशती है
जिसका प्रत्यय
वह स्वयं बन सके ।



सुबह का आकाश

●

आज सुबह देर से उठा था
रात नींद नहीं आयी थी
मौत का डर भी उतना ही मौजूद है
जिन्दगी कि कमरे की गर्मी हुई हवा
आज शायद सूरज देर से डूबेगा
बड़े दिनों की छुट्टियों में
लोग घर जाना भूल जाते हैं
देर—हाँ केवल देर ही तो है मेरे पास
बचने रहने के लिए
और विचार मैं कभी नहीं चाहे
अच्छे-बुरे की तमीज उन्हें नहीं
उन्हें तोड़ लेते हैं
फिर जोड़ते चले जाते हैं
मोह लगता है इसीलिए
अगले जाड़ों तक वे मुझे घेर लेंगे
फिर किसी भी एकान्त स्थान पर ले जाकर
मुझे मार डालेंगे
अपना अपराध पूछने से
न्यायाधीश का अपमान होता है
लेकिन वह मेरा इन्तजार करती रह जायेगी
इस शहर के किसी भी एक कमरे में
जहाँ पड़ोसी के कुत्ते को
अन्दर आने की पूरी छूट हुआ करती है
अब मैं रंगीन शराब पीना छोड़ दूंगा
इसे पीने से आँखें जल जाती हैं
और दिमाग की नसें सूज जाती हैं

लेकिन एक दिन ऐसा ही तो मैंने सोचा था
अखबार को सुर्खियों के बारे में भी
पर कहाँ छोड़ पाया था उन्हें पढ़ना
चाय की दुकान पर उन्हें पढ़ता रहा था
और क्षणों के रेशमी तन्तुओं को धुनता रहा था
कि शायद कोई तकिया या गिलाफ
चादर या बिस्तर तैयार हो जाए
पर कहां बन पाया था कुछ
देखते ही देखते क्षणों के समान रेशमी तन्तु
बेमौसम की बारिश में
किसी भीगी बिल्ली की तरह
भीग गये थे
एक ऐसी ही भीगी बिल्ली की तरह
वह आयी थी मेरे जीवन में
पर उसने अपने तेज नाखूनों से
मेरी चमड़ी को कभी नहीं खरोंचा
केवल स्मृतियां हैं
जो आज भी
उसके गुदगुदे पैरों के निशानों से
भरी हुई हैं
सच कहूं—मुझे खुशी हुयी थी
कि स्मृतियों की रगों में खून नहीं होता
खून तो होता है
शाम को लौटती हुई मेरी आंखों में
जब घर वापस आने के लिए मुझे बस नहीं मिलती
पर इन नियान रोशनियों का
क्या किया जाए
जिनका अच्छा लगना
रात को देर से घर पहुंचाता है
फिर सारी रात

प्रतिबिम्ब



मकानों की
बैसाखी के सहारे
झुका हुआ मौसम
रो रहा है
नदी की फूली हुई लाश
तेज़ी से बह रही है
बरगद पर बैठी
चील के पर
आपस में चिपक गए हैं
कहीं कोई आवाज नहीं
केवल टीन की छत पर
वर्षा के बूंदों की अनुगूंज
अकेलेपन में
किसी खिसकती घड़ी सी
बज रही है
गूंगे आकाश के चेहरे पर
फैली हुई यह उदासी
और यह भीगापन
कुछ भी नहीं
केवल
मेरा विशाल प्रतिबिम्ब है।



कल्पनातीत प्यार

●

मैं हर बार
एक ऐसे
उधार मांगने वाले
की तरह
तुमसे
वह सब कुछ
मांगता हूं
जिसे मैं
अपनी जिन्दगी में
कभी नहीं चुका सकता
और तुम
हर बार मुझे
उस नेक दुकानदार की तरह
निरख देती हो
जिसे अपनी दुनिया
अपने ग्राहक से
ज्यादा प्यारी होती है
पर फिर
यह सोच कर एक दिन
मैं तुम्हारा
सारा कर्ज़
एक साथ चुका दूंगा
बहुत सारे
सोने के अण्डों को
एक साथ पाने की
लालच में

तुम मुझे
वह सब कुछ
दे देती हो
जिसकी कि मेरी थकी हुई
जिन्दगी को
सख्त जरूरत होती है
पर मुझे
उस वक्त भी
यह मालूम होता है
कि यह दिन
जो तुम्हारी आंखों में
प्याज के छिलकों की तरह
चमक रहा है
कभी नहीं आएगा
एक खूबसूरत
छलावे की तरह
तुम्हें
यूंही छलता रहेगा
मुबारक हो तुम्हें
वह प्यार
जो केवल
कल्पनातीत है
और जिसकी वजह से
यथार्थ
मेरे लिए
सहज भोग्य
बन गया है



समय के साथ



अपने
समय के साथ है
वह सिपाही
जो बिना रौशनी की
गाड़ियों को
गुज़र जाने देता है
क्योंकि
अंधेरे को
सिक्कों में ढालना
उसे आ गया है
अपने समय के साथ हैं
वे लोग
जो आम रास्तों पर बने
पुलों को
बेच लेते हैं
बच्चों की परवरिश का
बहाना पिलाकर
अपनी चेतना को
सुला देते हैं
और
वे लोग भी
जो इस देश के
नक्शे को
बदलते चले जा रहे हैं
अमन और चैन की
बात कहकर

काठ का पुल



आज दोपहर को
मैं
उस काठ के
पुल तक गया था
जहां कुछ लोग
अपनी आत्मा से
अपने शरीर को
पृथक करके
फेंक आते हैं
और अब मैं
वहां से
वापस लौट रहा हूं
शहर
उसी तरह
नियॉन रोशनी में
डूबा हुआ है
जैसा कि मैं
इसे छोड़ गया था
कहीं कुछ भी नहीं
बदला है
यहां तक कि
स्वयं को स्वयं से
पृथक कर देने का
कारण भी
पर अब
मैं सोच रहा हूं

चिड़ा



छूटते
जहाज की
सीटियों की
अनुगूंज
बहुत ऊपर
आकाश में
फैल कर
जल की
सतह पर
बिखर गई है
दो द्वीपों के
बीच
जल का विस्तार
कम
होता जा रहा है



[illegible]

●

तुम्हें नहीं पाने तक
मैं तुम्हारे
करीब आता हूं
और तुम्हें पाने पर
मैं दूर चला जाता हूं
[यह तुम्हारी शिकायत है]
पता नहीं
मैं क्या चाहता हूं
तुम्हें
या इस चलते रहने को
शायद
इस चलते रहने को ही
क्योंकि
इसी रास्ते पर
एक दिन
तुम मुझे मिली थीं

●

जादूगर



वे झूठ बोलते हैं
जो यह कहते हैं
हिन्दुस्तान
अब बाजीगरों का
और सांप नचाने वालों का
देश नहीं रहा
यहां का हर आदमी
आज भी अपनी जबान पर
एक जहरीला सांप
और दिमाग में
एक सुरीली बीन
लिए घूमता है
फिर वह
किसी भी कहवा घर में
मजमा इकट्ठा करके
इस विषधर को
नचाने लगता है
पर यह राज सर्प
इसे कभी नहीं काटता
यह आज भी
उतनी ही सफाई से
किसी भी विप्लवी आग में
कूदकर
वापस लौट सकता है
जिस सफाई से
यह पहले

और आया करता था
आकाश से
पांच-पांच वर्ष तक के लिए
रस्सा फेंक कर
उस पर
सरसर चढ़ जाता
आज भी
इसके बाद हाथ का
खेल है
वे झूठ बोलते हैं
जो यह कहते हैं
हिन्दुस्तान
अब बाजीगरों का
और
शोर मचाने वालों का
देश नहीं रहा



असम्पृक्त

●

हर दिशा का निकास
मेरे अन्तर से है
और वह बिन्दु भी
मुझ ही में है
जहां आकर
सारी दिशाएं
समाप्त हो जाती हैं
हर रोज
मेरी ही आंखों में
सूरज उदय होकर
डूब जाता है
और हर अंधियारे
पाख के बाद
एक उजलापन
मेरी नसों को छू कर
दूर चला जाता है
ऋतुओं का संघर्ष
मेरे बाहर और भीतर
समान रूप से बीत रहा है
फिर भी न जाने क्यों
हर वस्तु से
अपने को असम्पृक्त
महसूस करता हुआ मैं
उम्र की गहराइयों में
डूबता चला जा रहा हूं

●

पुनरावृत्ति

●

मिलना
अच्छा लगता है यहाँ
तुम्हारे साथ होना
जहाँ
आकाश में
अकेली चिड़िया
काँपती है
समुद्र का ज्वार
शिखरों की
यात्रा करता है
दूर खड़ा
जहाज
विदा का
संकेत देता है
समय
तुम्हारे अन्दर
आकर ठहर जाता है
कितना अजीब लगता है
तुम्हारे साथ
इस थरथराते
अँधेरे में होना
क्षणों को
एक दोहराये गये
अन्त के लिए
गिनना

●

पगध्वनियां



हर रात
मेरे शहर की
छत पर
एक आदमी
अपने ही जूतों की
आवाजों से डरकर
बेतहाशा भागता है
और उसकी उपस्थिति से
घबरा कर मैं
अपनी पत्नी के
वक्ष से चिपक कर
सो जाता हूं



आसान काम ?

●

आप जानते हैं
क्या कर सकते हैं आप
अपने पड़ोसी को गोली मारकर
फरार हो सकते हैं आप
और यदि चाहें
तो किसी अंधे का हाथ पकड़ कर
उसे रास्ता पार करा सकते हैं आप
आप यदि चाहें तो
देर से आने वाली किसी गाड़ी को
वक्त पर पहुँचा सकते हैं आप
और यदि चाहें तो
किसी पुल में बम लगाकर
उसे जड़ से उखाड़ सकते हैं आप
आप चाहें तो अपने लिए
अफीम सिगार खरीद सकते हैं आप
और यदि चाहें तो बच्चों के लिए
दूध खरीद सकते हैं आप
यदि आप चाहें तो
उस बूढ़ी औरत के
सूखे स्तनों को चूसकर
मर भी सकते हैं आप
जिसकी कुर्सी पर बैठकर
इस देश की काया
पलट सकते हैं आप
पर कौन जाने
क्या करना चाहते हैं आप ?

●

चेहरों का जंगल



हर शाम चेहरों के जंगल में
मैं एक खूबसूरत चेहरा
तलाश करता हूं
और हर रात
उसकी तस्वीर
अपनी आंखों में उतारे
बिस्तरे पर
कसमसाकर सो जाता हूं
फिर रात बीते
वह तस्वीर निर्वसन होकर
मेरी आंखों के सामने
उभरने लगती है
और मेरा उबलता हुआ प्यार
उसके खामोश होठों से टकराकर
झर जाता है
मुझे महसूस होता है
मेरा पौरुष
कहीं से चटख गया है
पर फिर उस टूटे हुये पौरुष को
सारी रात
अपने कलेजे से लगाए
मैं एक ऐसा ठंडापन
महसूस करता हूं
जिसे दुनिया की
बड़ी से बड़ी शक्ति भी
कभी नहीं खरीद सकती



पूर्व-समुद्र

अमूर्त

●

अमूर्त
कमरे की हवा
कांच पर
बिखरा हुआ आकाश
और
पत्तियों से बिंधी
यह निस्तब्धता
जो कुछ गढ़ गई है
वैसा कभी कोई
कुछ भी नहीं
गढ़ सका आज तक

●

न होने का होना



तुम्हारा चेहरा
दुनिया की हर औरत से
बेतरह मिलता जुलता है
शायद इसीलिये
तुम्हारी याद का फैलाव
सिमटता जा रहा है
सलाखों के पार
सलाखों में
हर रोज उभरने वाले
चेहरे ने
मुझे मौन स्वीकृति दे दी है
और तुम्हारे
न होने का होना
एक लगाव बन कर
हमारे बीच पसर गया है



भूख और कविता



गर्मी की तीखी धूप में
अपने बित्ता भर सूखे खेत की
माटी गोड़ता किसान
उन लोगों से
कई भरपूर फसलें
अधिक काट चुका है
जिनके पास अपना
सारा का सारा आकाश है
सागर की गहराई है
या इस धरती का
खूबसूरत फैलाव है



न होने का होना



तुम्हारा चेहरा
दुनिया की हर औरत से
बेतरह मिलता जुलता !
शायद इसीलिये
तुम्हारी याद का फैलाव
सिमटता जा रहा है
सलाखों के पार
सलाखों में
हर रोज उभरने वाले
चेहरे ने
मुझे मौन स्वीकृति दे दी है
और तुम्हारे
न होने का होना
एक लगाव बन कर
हमारे बीच पसर गया है



भूख और कविता



गर्मी की तीखी धूप में
अपने बित्ता भर सूखे खेत की
माटी गोड़ता किसान
उन लोगों से
कई भरपूर फसलें
अधिक काट चुका है
जिनके पास अपना
सारा का सारा आकाश है
सागर की गहराई है
या इस धरती का
खूबसूरत फैलाव है



पीसा की मीनार



मेरे चारों ओर
फेंस गड़े हैं
इनके कांटों से
मेरा लहू रिसता है
और इनके तारों पर
मेरी अंतड़ियां झूलती हैं
इनके मध्य खड़ी
मेरे अहम् की मीनार
इतनी पुख्ता नहीं
रह गई
कि बिना सहारे के
टिकी रह सके
शायद इसीलिये
मैं
अब इसे
पीसा की मीनार
कहने लगा हूं



नीली हवाएं



न वहां नीली हवाएं
बह रहीं थीं
न आकाश
रंगीन कांच के टुकड़ों में
टूट कर बिखर गया था
न समुद्र के ज्वार में
खून के लाल कतरे
तैर रहे थे
और न शस्य श्यामल धरती पर
सुनहली बालें
सूख कर उजड़ गई थीं
ऐसा भी नहीं लग रहा था
कि आग जलकर
बिलकुल राख हो गई है
अगर नहीं मिल सकी थी
कोई चीज वहां
तो वह थी केवल
एक ईमानदार
अन्तर दृष्टि
जो हवा को हवा
आग को आग
पानी को पानी
मट्टी को मट्टी
और आकाश को
आकाश कह सके
या महसूस कर सके



दुर्बीन की आँखें



मेरे मन के
पिछले हिस्से में
एक उजड़ा हुआ
बाग है
बेतरतीब घास फूस
मकड़ियों के जाल
मुतहा खण्डहर
और मछलियों से भरे
सूखे ताल
मेरे मन का कमरा
ठण्डी भाडा गन्ध से
बेतरह गमक रहा है
मेरे मन के आगे
खुला आकाश है
सुदूर मकानों पर
पक्षियों के जोड़े
फ्रोड़ारत हैं
दुर्बीन से लगी
मेरी आँखें
उन पक्षियों को
देखती
चली जा रही है



सोने की चिड़िया

●

आज के अखबार के
प्रातः संस्करण में
मैंने पढ़ा
हमारी जनसंख्या
उननूवास करोड़ होने आ रही है
हम ग्यारह दशमुलव चार
मीलियन डालर का गेहूं
विदेशों से खरीदेंगे
तैतिस दशमुलव तीन प्रतिशत
देश का खाद्यान्न
नष्ट होता चला जा रहा है
केन्द्रीय सरकार
प्रान्तीय सरकारों को
खाद्यान्न खरीदने की अनुमति नहीं देगी
अमेरिका ने फिलहाल
खाद्य सहायता देना
मुल्तवी कर दिया है
दम दम के पास
नलों का पानी सूख गया है
भारत दुश्मनों से अपनी रक्षा
और तेजी के साथ करेगा
दो सौ इकत्तीस
प्राध्यापकों को
जेल में ही रखने का
आदेश दिया गया है
माइस....होस्टाइलों से

कल रात
आत्म सम्पर्ण कर दिया है
बिना लाइसेंस के
शस्त्र रखने के जुर्म में
दो आदमी
गिरफ्तार कर लिये गये हैं
और दो को
आजीवन करावास की
सजा सुना दी गई है
केन्द्रिय कर्मचारियों की
एक दिन की तनखा
काट लेने के लिये
सरकार दृढ़ प्रतिज्ञ है
केन्द्रीय कर्मचारी
इस बात पर हड़ताल करेंगे
कि अब ... बैंक के
सुपरवाइजर भी
हड़ताल करने पर आमादा हैं
....विश्वविद्यालय
अनिश्चित काल के लिये
बन्द कर दिया गया है
छात्रों में
बेचैनी फैली हुई है
मन बहलाने के साधन—कलकत्ता के
तमाम सिनेमा घर भी बन्द हैं
कर्मचारियों ने
हड़ताल कर दी है
काश्मीर सरकार को केन्द्र से
हर प्रकार की सहायता
दी जायेगी

कि नौ मर गये
पन्द्रह घायल हो गये
बस उलट गई थी
दो बिजली के झटके से
फल मर गये
हिमालय पर चढ़ने वाला
आरोही दल
बाल बाल बच गया
कि टी बी सील
तेजी से बेचे जायेंगे
आज
जोरों से तूफान आयेगा
और बारिश होने की
पूरी सम्भावना है
भारत के मतवाला
पूर्णरूप से जागरुक है
कि एक दिन और हंसिये
स्माइल ए डे
[एक कार्टून
पश्चिम बंगाल की शिक्षा योजना को
दीमक चाट रही है ।]



पाँच अवस्थाएं



परिवार के लोग
मुझे अबोध समझते हैं
दोस्तों ने किशोर से अधिक
कभी कोई महत्व नहीं दिया
अभी कल वह मिली थी
कह रही थी
कितने युवा हो मीत मेरे
पर पत्नी के लिए
मैं उम्रदराज हो चला हूं
असल में मैं अपने आप को
किसी भी प्रौढ़ से
कम मानने के लिए
हरगिज-हरगिज तैयार नहीं
इतनी विषम परिस्थितियों के बीच
जीता हुआ मैं
एक साथ कई अवस्थाओं से
चुकता चला जा रहा हूं
फिर भी न जाने क्यों
अजगर की तरह फैला हुआ
यह अकेला रास्ता
मेरे अन्दर कभी खत्म नहीं होता



टूटते सम्बन्ध



हमारे सम्बन्ध
जो पत्थरों की
सड़कों से
काठ की
सीढ़ीयों से
और लोहे के
पुलों से होकर गुजरते हैं
यदि टूट गये
तो उन्हें
ये बेजान चीजें जीयेंगी ।



स्पीड ऐज



बिस्तर
बाथरूम
और किचन से होकर
कई रास्ते
जो दफ्तर जाते हैं
वहां पहुंचते ही
घर की ओर
से लौटने लगते हैं
शाम को
बसों और ट्रामों का
विराम जीने के बाद
बच्चों की चीखों से बचकर
अखबार में
दुबक जाते हैं
सुर्खियों से घबराकर
रोटी मे
एक नया स्वाद
तलाश करते हैं
फिर
उसे भी
पानी के सहारे
गले के नीचे उतार कर
पत्नी की
बोटियां नोचते हैं
तथा उससे भी ऊब कर
घड़ी में ऐलार्म लगाकर

सो जाते हैं
पर सुबह-सुबह
इसके बजने से
खीज कर
इसका बटन
कुछ इस कदर दबाते हैं
कि बच्चे
चीख पड़ते हैं
और पत्नी
फटी आंखों से
इनकी ओर देखती रह जाती है



थके हुए रास्ते

•

तेजी से
भागते हुए
कई रास्ते
कहीं नहीं जाते
केवल थककर
लौट आते हैं

•

मरा हुआ समय....

●

समय के जन्म के साथ
पहला मसीहा आया था
अब फिर यह आया है
समयमर चुका है
यह राज-यक्ष्मा का मरीज है
खूनी खांसो ने
इसे खोखला बना दिया है
लकड़ी की जगह
इसके हाथों में
रोल किया हुआ
अखबारी कागज है
इसकी कमीज के सारे बटन
टूट चुके हैं
और पायजामे में
कई पैवन्द लगे हैं
इसके जले हुए ओठों से लगी
चारमीनार सिगरेट
धूएं की जगह
वक्त की कड़ुआहट उगल रही है
पिछली शाम
यह काफे की घाटी में आया था
सो यह झोली में से
अपने टेस्टामेंण्ट के टुकड़े
निकाल-निकाल कर बांट रहा था
फिर अचानक
यह:पागलपन की हंसी हंसकर

एक कुर्सी पर लुढ़क गया था
और अपनी दाढ़ी के बाल
नोचने लगा था
शायद इसे अपनी मरियम की
याद हो आई थी
जो दूर गांव में
इसके मनिआर्डर का
इन्तज़ार कर रही थी
और साथ ही
उन भेड़ों की भी
जो एक के बाद एक
भूख से मरती चली जा रही थीं
पर फिर यह ऐशट्रे में थूक कर
उठ खड़ा हुआ था
और हंसकर
टेस्टामेंन्ट के टुकड़े बांटता हुआ
किसी दूसरी घाटी में
चला गया था
तब तक के लिये
जब तक कि इसे
किसी सरकारी सेनीटोरियम की
चारपाई पर
हमेशा-हमेशा के लिए
क्रूसीफाई नहीं कर दिया जाता



जीने मरने का फर्क

●

अगर मैं
अभी मर जाऊं
तो
कोई फर्क
नहीं पड़ता
पर यदि मैं
जिन्दा बना रहूं तो
सच में
बहुत बड़ा
फर्क
पड़ता है

●

यूनेस्को और अणु युद्ध



खतरा
अलग रहिए
यह रेडियो सक्रीय
किरणों का क्षेत्र है
अपनी नंगी आंखों से
इस शिलालेख को
मत पढ़िये
यहां सो रहे हैं।
बीसवीं शताब्दी के
वे मृत योद्धा
जो अपने जीवन काल में
कभी यह नहीं जान सके
कि वे किस जमीन के लिए
किस जमीन पर
लड़ रहे हैं
ईश्वर उनकी आत्मा को
अणुविक शान्ति प्रदान करे
और उनकी विधवा पत्नियों को
योद्धा की मृत्योपरान्त
मिलने वाले
वीरता के
स्वर्ण पदक



एक गर्भस्थ स्थिति



हम सब गर्भस्थ हैं
समय के आयाम में
जिसका अस्तित्व
क्षण के सहस्रांश से भी
लाखों गुणा छोटा है
बीता हुआ कल
हमारी मृत्यु का
पर्व मना रहा है
और आने वाला कल
हमारी अजन्मी
पगध्वनियों की
बाट जोह रहा है
गर्भाशय की घुटन
और हमारी
कच्ची आंखों के आगे
उमड़ते रंग
हमें बाध्य कर रहे हैं
कि जीवन और मृत्यु की
इस विषम परिस्थिति से
जूझते हुए
हम अपने गर्भस्थ अस्तित्व को
बनाए रखें।



नई पीढ़ी का गीत



पौधों के हाथों से
अर्पित क्षणों का
तोड़ लिया जाना
और उन्हें
अपनी अर्चना के क्षणों से
जोड़ लेना
कोई पूजा नहीं
यह केवल उसके लिए
एक सेकेण्डहैंण्ड घड़ी की
भेंट है
जो वक्त की रफ्तार से
बहुत पीछे
और पीछे
अपनी मरियल आवाज में
चलती चली आ रही है



अशोक शर्मा

एक और विश्वास



जीने के लिए
यही विश्वास
क्या कम है
कि हम में से
प्रत्येक पुरुष
मनु
और प्रत्येक नारी
शतरूपा है
क्योंकि
कल जब प्रलय आयेगी
और यह धरती
जलमग्न हो जाएगी
तो हममें से बची
कोई भी नारी
मां
और हममें से बचा
कोई भी पुरुष
सारे विश्व का
पिता होगा



निर्जन



कोई भी हुजूर
किसी भी मजूर को
आदमी नहीं समझता
और कोई भी मजूर
किसी भी हुजूर को
इन्सान मानने के लिए
तैयार नहीं
शायद इसीलिए
यह धरती
जनविहीन हो गई है
यहां कोई नहीं रहता
हर नया आने वाला आदमी
यहां के अकेलेपन से
घबरा कर
बदहवास भागता
और किसी शुष्क चट्टान से
टकराकर
हमेशा के लिए मर जाता है
फिर केवल उसकी लाश
विगलित होने से पहले तक
यहां वहां भटकती रहती है

●

आलोक ध

सोसाइटी गर्ल

●

एक पिता ने
एक बच्ची से कहा
तुम हमारे साथ
सिनेमा मत चलो
हम तुम्हें खिलौने देंगे
एक मां ने
एक बच्ची से कहा
तुम स्कूल चली जाओ
हम तुम्हें चाकलेट देंगे
एक किशोरी से
एक प्रौढ़ ने कहा
तुम हमें खुद को दे दो
हम तुम्हें
लिप्सटिक
क्रेसरोज,
आइब्रोज पेन्सिल देंगे
और उस किशोरी ने
अपने आपको
उस प्रौढ़ के हाथों में
सौंप दिया
वह मार्लिन मनरो थी

●

अस्तित्वबोध



अगर उछल कर
अलग न हट गया होता
तो आज गाड़ी
कलेजे पर से गुजर जाती
यदि राशन की दूकान पर
हल्ला न बोल दिया होता
तो आज
पूरे परिवार को
भूखा रह जाना पड़ता
और यदि
रिरिया कर रो न दिया होता
तो आज
नौकरी से
निकाल दिया जाता



आलोक शर्मा

शव यात्रा

●

मैं तुम्हारे प्रति अपनी कृतज्ञता
कैसे ज्ञापित करूँ दोस्त
तुम्हीं तो मेरे
एकमात्र मित्र थे
तुम कभी मेरी बातों से
बोर नहीं हुए
तुमने मेरे लिए
कभी धूप, पानी और पसीने में
घूमते रहने पर
अपनी अनिच्छा प्रकट नहीं की
दफ्तर के ओवरटाइम को भी
न जाने कितनी बार
तुम काफी के कड़वे प्यालों में
मेरे लिये घोल कर पी गए
यहां तक कि
अपनी प्रिया के साथ
मेरे प्रेम सम्बन्धों को भी
तुम अनदेखा कर गए
पर क्षमा करना दोस्त
मैं चाह कर भी
तुम्हारी शव यात्रा में
शामिल नहीं हो सका
मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा

●

नीचे धंसता हुआ मकान



एक मकान
नीचे धंसता चला जा रहा है
मकान इसलिए कहना पड़ रहा है
कि देश कहने पर
मेरे समकालीन मुस्करा पड़ेंगे
फिर कहीं मुझे भी
अपनी मौलिकता की हिफाजत करनी है
इसकी मकान को छत पर बिछी खाटों पर
सोए हुए लोग
एक दीन हंसी हंस रहे हैं
वह शायद इसलिए
कि अब कुछ भी संभव नहीं है
क्योंकि इनसे पिछली पालों के लोग
छत पर चांद निहारते रहे थे
अपनी प्रियाओं के साथ
मांस के दरिया में नहाते हुए
उनके केशों में फूल बांधते रहे थे
कैसे कहूँ कि हमने वैसा कुछ भी नहीं किया
पर हमारे निकट इस बात का एहसास
हमेशा बना रहा
कि उस तरह का जो कुछ भी हम कर रहे हैं
वह ठीक नहीं है
शायद इस क्रम में वे भूल जाया करते थे
कि सिर्फ माटी और गारे के मजबूत होने का
उद्‌घोष करते रहने से
इसकी कमजोरी दूर नहीं हो जाएगी

क्योंकि हममें से ज्यादातर लोग
या तो कलाकार हैं
या राजनीतिज्ञ हैं
अथवा बेकार हैं
जिनमें से कोई भी निर्माण का काम नहीं जानता
और यदि कुछ लोग जानते भी हैं
तो उनके हाथ
मुर्दों पर ताजमहल खड़ा करने वाले बादशाहों ने
मसीहाई का बोध लगाकर
हमेशा-हमेशा के लिए काट लिए हैं
●

परिचय



परिचय क्या दूं
उस नाम का
जिसको गीध चीथ रहे हैं
या उस वल्दियत का परिचय दूं
जो टूटते हुए सम्बन्धों के बीच
उस अभिभावक के सरीखी बन गई है
जो दूर-दराज छात्र को
हर माह पढ़ने के लिए
एक निश्चित रकम भेजा करती है
या उस उम्र का परिचय दूं
जो अपने समस्त विश्वासों के साथ
हर वस्तु से अपने को असम्पृक्त महसूस करती हुई
अपनी ही गहराईयों में डूबती चली जा रही है
या उस ठिकाने का परिचय दूं
जहां मेरी पड़ोसिन ने कल रात
जिस बर्तन में खाना खाया था
आज सुबह उसे बेच दिया
और जिस छत के नीचे वह
आज भूखी सांसें गिन रही थी
कल उसे गिरवी रखने की बात वह सोच चुकी है
या यही कह दूं कि मेरा
अपने मकान की कमजोर नींव से कोई सरोकार नहीं
अपनी ही जड़ स्वयं काटने वाला
मैं महाकवि कालिदास बन गया हूं
आखिर कौन-सी शिक्षा का हवाला दूं मैं लोगों को
उस शिक्षा का

जो कोई भी निर्णय ले पाने में सर्वथा असमर्थ हूँ
जबकि बात मेरी मानसिक मृत्यु पर बन आती है
अभी तक मैं अपने लिए
कोई भी पहचान नहीं खोज पाया हूं
अतिरिक्त इस निसंगता के
पर अब वह भी मुझे किसी चमगादड़ की तरह
उलटी लटकी हुई प्रतीत होती है—
पक्षधरता के अभाव में
एक अपरिचित भीड़ है
जो मेरे सिर से होकर गुजर रही है
और इसके नीचे दबा हुआ मैं
अपने वक्त से कुछ बेहद बीमार और तड़पते क्षणों को
अपनी उंगलियों से कस कर पकड़ने के बाद
उन्हें कागज पर बांध कर
प्रदर्शनी में सजा रहा हूं
शायद रहम खाकर लोग
मुझे स्वीकार कर लें
खाली वक्त गालियों के सुपुर्द है
काम का वक्त नएपन के नाम
और जहां तक चरित्र का प्रश्न है
नैतिकता तथा अनैतिकता के बीच
संतुलन कायम करने की कोशिश में
बदरबांट करता हुआ मैं
निरंतर झुकता चला जा रहा हूं
यूं वर्गीकरण के लिए
मेरा पेशा आप जानते हैं
और जिस भीड़ में मुझे खोजा जा सकता है
उसका इस पेशे से पता कर लेना
एक आसान बात है।

●

समझ अपनी-अपनी



मेरी समझ से कुछ लोग
मुझे कुछ नहीं समझते
और मेरी समझ से
कुछ लोग
मुझे बहुत कुछ समझते हैं
जो लोग मुझे
कुछ नहीं समझते
वे मुझे उल्लू समझते हैं
और जो लोग
मुझे कुछ समझते हैं
वे लोग मुझे
हाथी की तरह
विराट् मानते हैं
इसलिए मैं
लोगों की सामूहिक समझ से
एक उड़ते हुए किस्म का
हाथीनुमा उल्लू हूं
जो परिस्थितियों के
तेज थपेड़ों में
कागज की चिन्दियों की तरह
इधर-उधर उड़ता रहता है
पर यह जो उड़ते हुए किस्म का
हाथीनुमा उल्लू है
इसकी भी
अपनी एक समझ है
यह रात को अपनी आंखें

और दिन के उजाले को
ईख के पौधे मानता है।
और यह जो ईख के पौधे हैं
अपनी समझ से ये
जलते हुए सूरज का
मीठा पसीना
हर वक्त उस मट्टी में
घोलते रहते हैं
जिस मट्टी में
कविता की एक ऐसी
समझ पैदा हो सकती है
जो आदमी को आदमी के
करीब ला सके
या जो आदमी को
उड़ते हुए किस्म का
हाथीनुमा उल्लू न माने
पर वह मिट्टी
ईख के पौधों की
लाख कोशिशों के बावजूद
एक वैसी समझ के अभाव में
हमेशा वीरान पड़ी रहती है
●

आलोक शर्मा

सरल पहेली नम्बर सैंतालीस



जिसका सिर
उनतीस हज़ार फुट की
ऊंचाई पर
किसी ध्रुव-रीछ की तरह
बर्फ में दबा हुआ है
और पैर
किसी स्यार के
कंकाल की तरह
कोसी नदी के तल में
धंस गए हैं
जिसके पेट में
किसी चूहे की तरह
आर्यभट्ट उछल रहा है
और आंखों में
एक सपना
किसी मरी हुई मछली की तरह
तैर रहा है
जिसके कानों में
टूटते वादों की
सफ़ाई की गूंज
किसी विहिग के विलाप की तरह
भर गयी है
और काम करते हुए
हाथ
किसी मोर के पैरों की तरह
बदसूरत हो गए हैं

जिसके दिल में
किसी बीमार गाय की
आंखों की तरह
हर समय
एक खारे पानी का
दरिया बहता है
और दिमाग
हर वक्त
किसी पागल घोड़े की
खूनी टाप से
धमकता रहता है
मेरे बच्चों
क्या तुम बतला सकते हो
वह कौन-सा जानवर है।



आलोक धर्मा

भूल-सुधार

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	गलती पंक्ति	सही पंक्ति
३	१६	उन जानवरों की बनिस्थत	उन जानवरों की बनिस्पत
७	२०	हल्को ठण्ड आर कुहासे के बीच	हलकी ठण्ड और कुहासे के बीच
१०	१६	धड़कते हुए	धड़कते हुए
१८	५	भ्रूंण हत्याओं से गर्भित	भ्रूण हत्याओं से गर्भित
१९	६	वे स्वयं को किसी खाई में	वे स्वयं को किसी खाई में
२६	१३	रुब बन गया हो	ख़ुब बन गया हो
४४	११	केवल टीन की छत पर	केवल टीन की छत पर
७९	१७	अणुविक शान्ति प्रदान करे	आणुविक शान्ति प्रदान करे
	१९	योध्दा की मृत्योपरान्त	योद्धा के मृत्योपरान्त